बनमानुस का शिकार करने की किसे सूझती थी । जब लोग खा-पीकर फारिग़ हुए तो सलाह होने लगी कि बनमानुस का शिकार कैसे किया जाय । उबांशी सरदार ने कहा रात को आप लोग उसे नहीं पा सकते । दिन को ही उसका शिकार हो सकता है । शिकारियों को भी उसकी सलाह पसन्द आई । सब अपनी-अपनी छोलदारियों में घुस गये और बाहर पहरे का यह बन्दोबस्त कर दिया कि दो - दो घंटे के बाद पहरा बदल दिया जाय । शिकारी थका था , जल्‍दी ही सो गया । लेकिन थोड़ी ही देर सोया था कि उसकी नींद टूट गई और सामने एक परछाईं - सी खड़ी दिखायी दी । उसकी आंखें आग की तरह जल रही थीं । अफ़सर मे फौरन आवाज़ दी - - संतरी पर कोई जवाब न मिला ।